विरह-भजन

श्रीगुरुदेवसे कृपा प्राप्तकर जो उनके प्रति अपनी असीम कृतज्ञताको अनुभव कर रहे हैं तथा जिन्होंने विश्रम्भ-भावसे (अन्तरङ्गतासे) उनकी प्रचुर सेवा की है, केवल वे सौभाग्यशाली जन ही उन श्रीगुरुदेवसे विरहका अनुभव करेंगे, वे ही उनके लिए क्रन्दन करेंगे।

जिनको विप्रलम्भका कुछ अनुभव है, केवल वे ही सम्भोग-लीलाका आस्वादन कर सकते हैं। विप्रलम्भ-भावका अनुभव करना हमारे साधन-भजनका मुख्य और अन्तिम लक्ष्य है। यदि यह प्राप्त हो गया, तो हम सब कुछ अनुभव कर सकते हैं।

श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

गौड़ीय वेदान्त प्रकाशन GVP

।। श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः ।।

श्री श्री भागवत पत्रिका

वर्ष—८ राष्ट्रभाषा हिन्दीमें श्रीश्रीरूप-रघुनाथकी वाणीकी एकमात्र वाहिका संख्या—(१-२)

विरह-विशेषांक—२

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री

श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

॥श्रीश्रीगुरु–गौराङ्गौ जयतः॥

वर्ष ८ | श्रीगौराब्द ५२५, विष्णु-मधुसूदन मास
वि. सं. २०६८, चैत्र-वैशाख मास ; सन् २०११, २० मार्च–१७ मई | संख्या १–२

विषय–सूची

विरह-विशेषांक (संख्या—२)

श्रीनारायण–पञ्चदशकम् ४
श्रीमद्भक्तिसर्वस्व गोविन्द महाराज

'वैष्णव शरीर अप्राकृत सदा' १०

'वैष्णव' कर्मफलबाध्य नहीं १०
श्रीश्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर 'प्रभुपाद'

अप्राकृत वैष्णवोंमें देह और देहीका भेद नहीं; वे नित्य, अप्राकृत और सनातन १४
श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज

आविर्भाव–शक्तिके द्वारा जगतमें प्रकटन एवं तिरोभाव–शक्तिके द्वारा प्रकट–प्रकाशसे अन्तर्धान १८

विरह–भावावली २४

श्रील गुरुदेवके प्रति उनके समकालीन गौड़ीय–वैष्णवोंकी पुष्पाञ्जली ४७

श्रीश्रीमद्भक्तिवल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराजकी मधुर स्मृतियाँ ४७

विरहमें मनोहर स्मृतियोंका स्मरण ४९
श्रीश्रीमद्भक्तिविज्ञान भारती गोस्वामी महाराज

श्रीश्रीमद्भक्तिप्रसाद पुरी महाराजजीकी स्नेहपूर्ण स्मृतियाँ ५४

विरह–संवाद ५५
श्रीश्रीभागवत–पत्रिकाके प्रकाशनके सम्बन्धमें विवरण .. ५५
विशेष ज्ञातव्य ५५
श्रीश्रीभागवत–पत्रिकाके ग्राहकोंसे वार्षिक सदस्यता–शुल्क भुगतानके लिए निवेदन ५६

संस्थापक एवं नियामक

नित्यलीलाप्रविष्ट परमहंस ॐ विष्णुपाद
अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजके

अनुगृहीत

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद त्रिदण्डिस्वामी
श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

प्रेरणा-स्रोत

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त वामन
गोस्वामी महाराज

सम्पादक—श्रीमाधवप्रिय दास ब्रह्मचारी,
श्रीअमलकृष्ण दास ब्रह्मचारी

प्रचार सम्पादक—त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त वन महाराज,
त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त सिद्धान्ती महाराज

प्रचार सह-सम्पादिका—श्रीयुता उमा देवी दासी,
श्रीयुता सुचित्रा देवी दासी

सहकारी सम्पादक संघ—

(१) डॉ. श्रीवासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी, पी-एच. डी., डी. लिट्. (संघपति)
(२) डॉ. श्रीअच्युतलाल भट्ट, एम. ए., पी-एच. डी.
(३) त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त तीर्थ महाराज
(४) डॉ. (श्रीमती) मधु खण्डेलवाल, एम. ए., पी-एच. डी.
(५) श्रीपरमेश्वरी दास ब्रह्मचारी 'सेवानिकेतन'
(६) श्रीपुरन्दर दास ब्रह्मचारी 'सेवाविग्रह'

कार्याध्यक्ष—श्रीपाद प्रेमानन्द दास ब्रह्मचारी 'सेवारत्न'

कार्यकारी मण्डल—श्रीविजयकृष्ण दास ब्रह्मचारी, श्रीमदनमोहनदास ब्रह्मचारी, श्रीप्राणकृष्णदास ब्रह्मचारी, श्रीगौरराजदास ब्रह्मचारी, श्रीसञ्जय दास ब्रह्मचारी, श्रीजगदीशप्रसाद दासाधिकारी, भक्त सोनु

ले-आउट और डिजाइन—श्रीकृष्णकारुण्य दास ब्रह्मचारी, श्रीविकास ठाकुर

प्रकाशक—त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त माधव महाराज, पी-एच. डी.

श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ
जवाहर हाट, मथुरा-२८१००१ (उ. प्र.)
दूरभाष : 08791273306

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति ट्रस्टकी ओरसे त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त माधव महाराज द्वारा श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, जवाहर हाट, मथुरासे प्रकाशित।

Visit us at:
www.bhagavatpatrika.com

e-mail:
mathuramath@gmail.com,
vijaykrsnadas@gmail.com

विरह–विशेषांक
(संख्या–२)

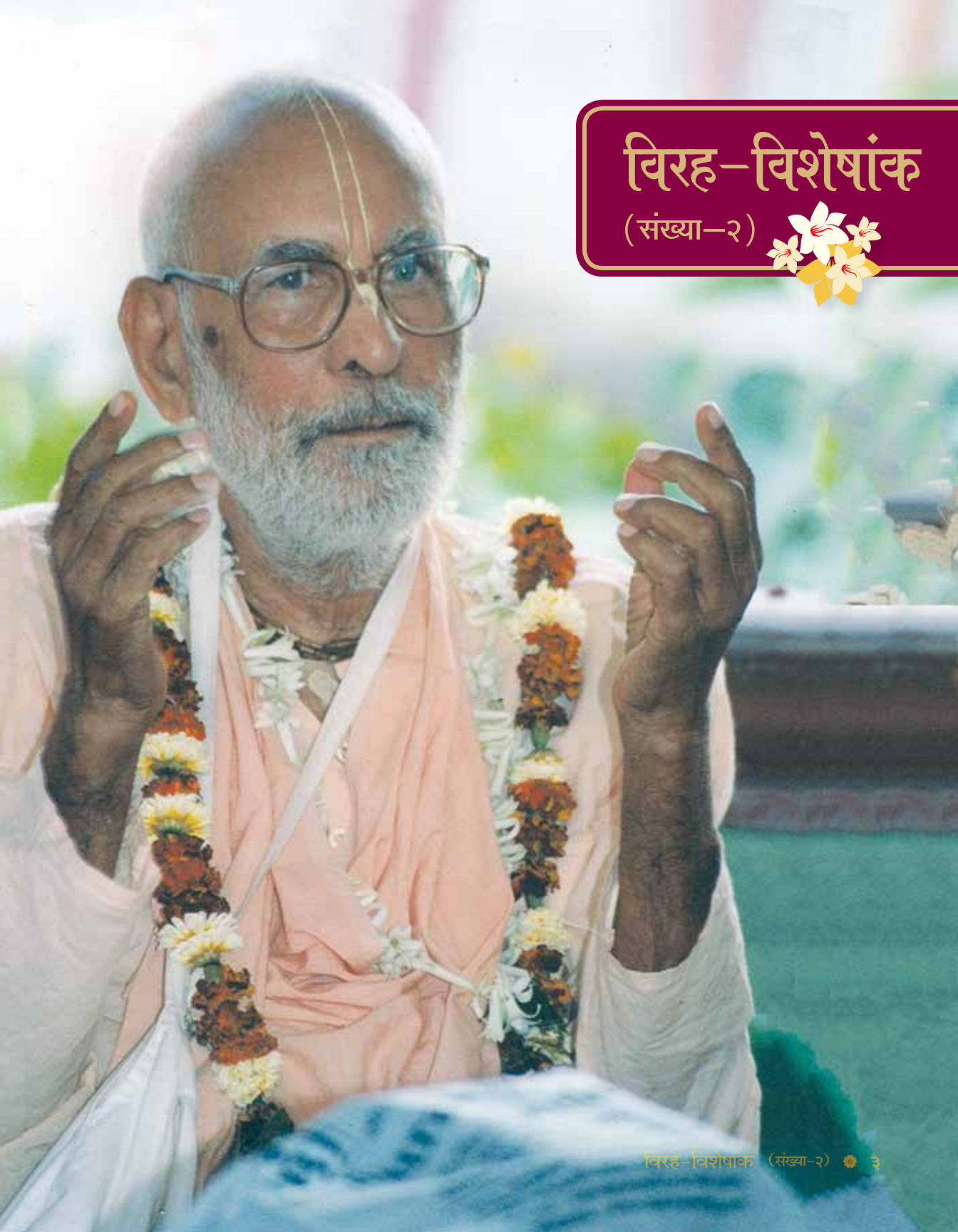

श्रीनारायण–

श्रीमद्भक्तिसर्वस्व गोविन्द महाराज

श्रीचैतन्यमहाप्रभोर्येन विज्ञापितं मतम्।
क्व गतो भक्तिवेदान्तनारायणो यतिर्महान्॥१॥

श्रीचैतन्य महाप्रभुके मतको पृथ्वीपर प्रचार करनेवाले, महात्मा, यतिराज श्रील भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामिपाद कहाँ चले गये?॥१॥

विज्ञातशास्त्रतात्पर्यः सद्गुणकीर्तिमण्डितः।
क्व गतो रागमार्गैकवैशिष्टगायकाग्रणी॥२॥

शास्त्रोंके तात्पर्यको जाननेवाले, सद्गुणरूप कीर्तिसे मण्डित, रागमार्ग–भक्तिके वैशिष्ट्यको ही गायन करनेवालोंमें अग्रणी श्रील भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामिपाद कहाँ चले गये?॥२॥

पञ्चदशकम्

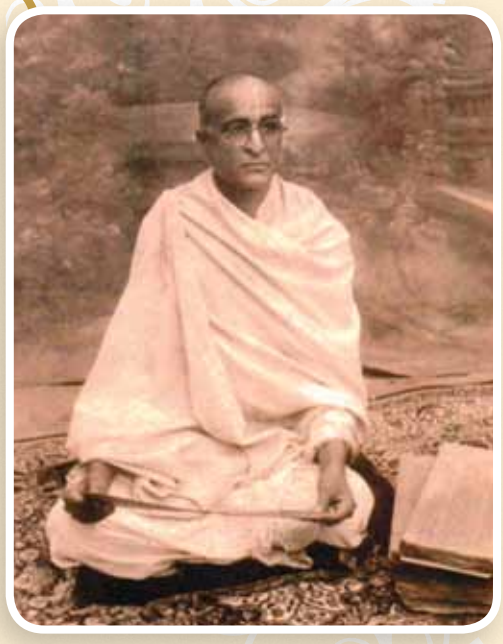

सारस्वतकुलोत्तंसो भागवतगुणान्वयी।
क्व गतः पण्डितैर्मान्यो गौरकृष्णैकपार्षदः॥३॥

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती प्रभुपादके कुलके भूषणस्वरूप, श्रीमद्भागवतमें वर्णित महाभागवत भक्तोंके गुणोंके आश्रय, पण्डितोंके मान्य और गौरकृष्णके पार्षद श्रील भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामिपाद कहाँ चले गये? ॥३॥

अपसिद्धान्तध्वान्तार्कः सद्धर्मकौमुदीन्दुकः।
क्व गतो गुर्वभीष्टकृद्गौस्वाम्यादर्शमन्दिरः॥४॥

अपसिद्धान्तरूपी अन्धकारके विनाशमें सूर्यकी भाँति तेजस्वी, सद्धर्मरूप कुमुदके प्रकाशमें चन्द्रमाकी भाँति स्निग्ध हृदययुक्त,

गुरुवर्गके मनोऽभीष्टको पूर्ण करनेवाले और षड् गोस्वामीजनोंके आदर्शके मन्दिर (आलय) स्वरूप श्रीलभक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामिपाद कहाँ चले गये? ॥४॥

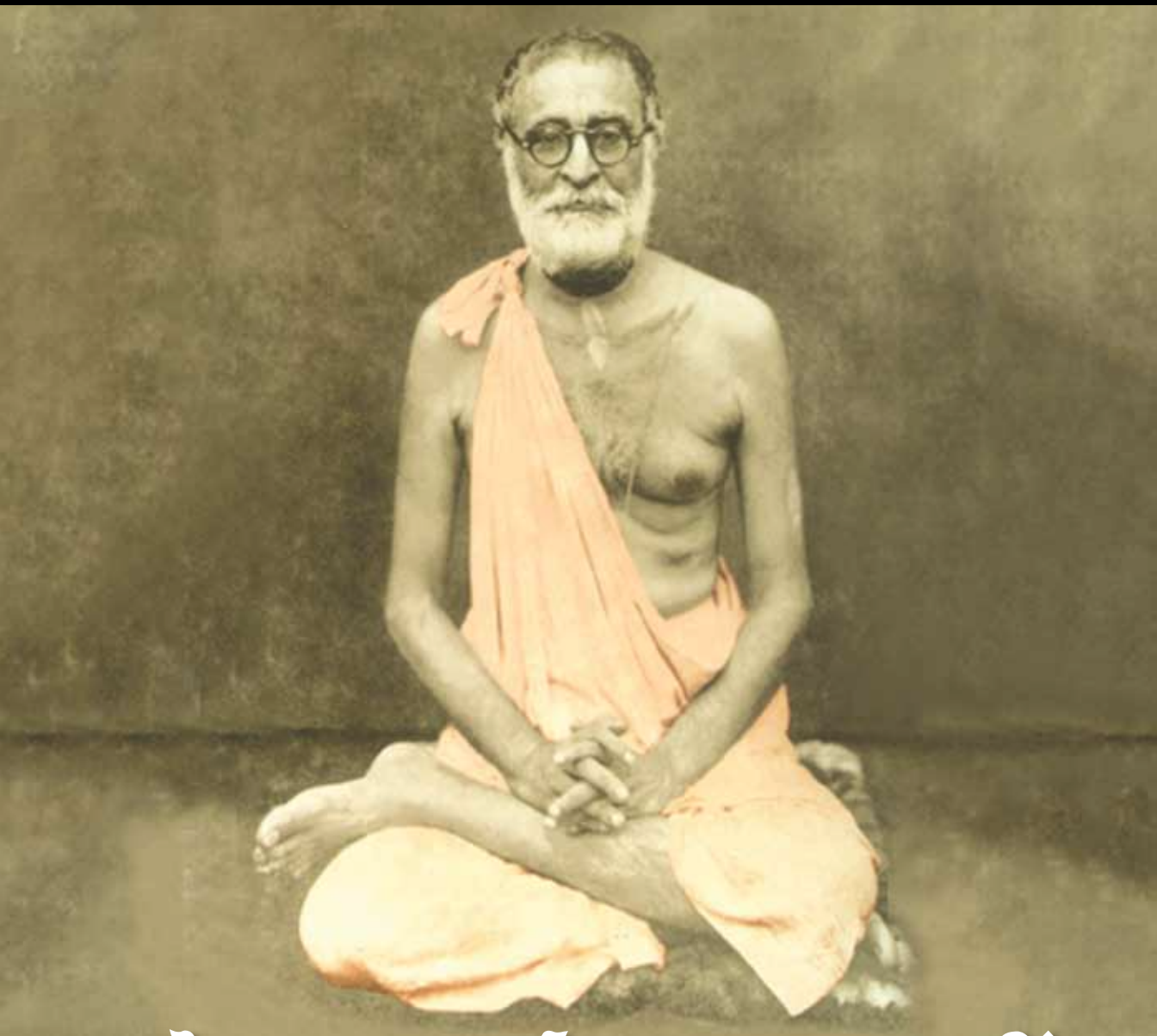

'वैष्णव' कर्मफलबाध्य नहीं

जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर 'प्रभुपाद'

श्रील भक्तिविनोद ठाकुरके चतुर्दश वार्षिक विरह–महोत्सवमें प्रदत्त वक्तृताके कुछ अंश
(नीलिमा, चक्रतीर्थ समुद्रतीर, पुरी, १९२८)

अप्राकृत वैष्णवोंमें देह और देहीका भेद

ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज

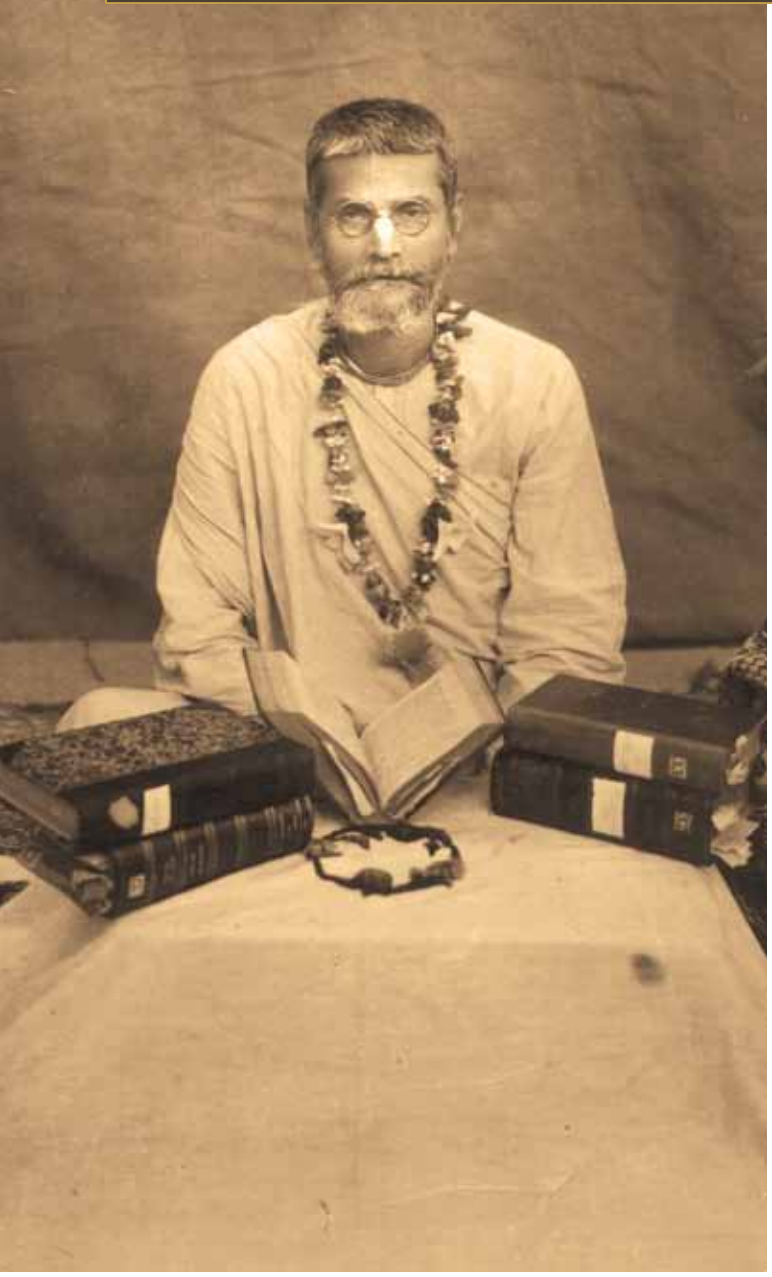

(सितम्बर, १९३४ के दिन श्रील ठाकुर भक्तिविनोदकी शुभ आविर्भाव–तिथिके अवसरपर श्रीधाम मायापुरमें स्थित श्रीचैतन्यमठके अविद्याहरण नाट्यमन्दिरमें दिये गये प्रवचनके कुछ अंश)

हम जन्म और मृत्युके सम्बन्धमें जो जानते हैं, श्रील भक्तिविनोद ठाकुरके सम्बन्धमें वह प्रयोज्य नहीं है। वैष्णवगण जन्म और मृत्यके स्थानपर आविर्भाव–तिरोभाव, प्रकट–अप्रकट आदि शब्द व्यवहार करते हैं। 'जन्म' और 'मृत्यु' शब्दसे एक प्रकारका हेय, अनुपादेय एवं शोक–दुःखका भाव चित्तमें प्रकाशित होता है। किन्तु प्रकट–अप्रकट, आविर्भाव–तिरोभाव–इन समस्त शब्दोंके द्वारा उस प्रकारके भाव उदित नहीं होते। वस्तुतः वैष्णवोंके आविर्भाव–तिरोभावमें जन्म–मृत्युके समान किसी प्रकारकी क्लेशपूर्ण क्रिया नहीं रहती। इसलिये वैष्णवगण साधारणतः जन्मके स्थानपर 'आविर्भाव या प्रकट' एवं मृत्युके स्थानपर 'तिरोभाव या अप्रकट' शब्द व्यवहार किया करते हैं।

हम श्रीचैतन्यदेवके लीला–ग्रन्थसे यह जान पाते हैं–

अद्यापिह सेइ लीला करे गौरा राय।
कोन–कोन भाग्यवान् देखिवारे पाय॥

(श्रीचैतन्यभागवत मध्य २३/५१३)

[अर्थात् श्रीचैतन्य महाप्रभु आज भी उन लीलाओंको कर रहे हैं, किन्तु कोई–कोई सौभाग्यवान् जीव ही उन लीलाओंको देख पाते हैं।]

इस उक्तिके द्वारा हम यह समझ सकते हैं कि श्रीचैतन्यदेवके नित्य सेवकगण नित्यकाल

नहीं; वे नित्य, अप्राकृत और सनातन

ही अवस्थान करते हैं। यद्यपि हममेंसे कुछ लोगोंने कुछकाल–पूर्व श्रील भक्तिविनोद ठाकुरके दर्शनका सौभाग्य प्राप्त किया था, किन्तु वर्त्तमानमें उन्हें न देख पानेके कारण हम उनके नित्य अवस्थानके सम्बन्धमें सन्देह कर सकते हैं। तथापि यह समझना चाहिये कि इन जड़–नेत्रोंसे न दिखलायी देनेपर भी वे आज भी वर्त्तमान हैं। आपलोग इससे विस्मित मत होना, मैं सत्य–सत्य ही कह रहा हूँ—वे आज भी वर्त्तमान हैं। इस विषयमें एक उदाहरण देकर मैं आपके संशयको किञ्चित दूर करनेकी चेष्टा कर रहा हूँ।

मान लीजिये कि हम किसी एक मार्गके निकट स्थित किसी घरकी खिड़कीके निकट बैठे हैं। तब देखा गया कि एक व्यक्ति उस मार्गसे पैदल जा रहा है। उस खिड़कीसे हमारी दृष्टि जितनी दूर तक गयी, उतनी दूरतक हम उस व्यक्तिको देख पाये, इसके पश्चात् वह व्यक्ति अदृश्य हो गया। आपलोग इस उदाहरणका किञ्चित अनुधावन करके देखिये। जिस व्यक्तिको हमने खिड़कीसे मार्गपर देखा था, हमारे दृष्टिगोचर होते ही हमने उसके अस्तित्वको स्वीकार किया, किन्तु दृष्टिसे दूर होनेपर वह अस्तित्वहीन हो गया अथवा उसकी सत्ताका लोप हो गया—इस प्रकारका विचार करना निश्चित ही बुद्धिमता नहीं है। वह व्यक्ति हमारे दृष्टिगोचर होनेसे पूर्व भी था तथा हमारे सामनेसे अदृश्य होनेके बाद भी वह विद्यमान है—ऐसा ही समझना होगा। श्रील भक्तिविनोद ठाकुरकी आविर्भाव–तिरोभाव क्रियाको भी इस उदाहरणके साथ युक्त कर लेनेपर हमारा संशय कुछ परिमाणमें दूर हो सकता है। अतः हमारे प्राकृत–नेत्रोंके दृष्टिगोचर न होनेके कारण वे आज वर्त्तमान नहीं हैं, यह कहना युक्तिसङ्गत नहीं है। वैष्णवगण नित्य हैं—उनका शरीर अप्राकृत और नित्य है—जन्म–मरणके समान परिवर्त्तनशील हेय धर्म उनमें नहीं है और न ही कभी हो सकता है।

अब वैष्णवोंका शरीर अप्राकृत होता है—इस बातपर आपको सन्देह हो सकता है। आपलोग मन–ही–मन यह विचार कर सकते हैं—'ठाकुर महाशय जो देह लेकर जगतमें आविर्भूत हुए थे, अप्रकटके समय वे उस देहका त्याग करके ही चले गये। हमने उनकी उस स्थूलकाय देहका उनके अप्रकटकालमें स्पर्श किया था एवं उनकी उसी देहको समाधि भी दी थी। अतः उनके नित्यधाममें प्रयाणकालके समय हमने पहले उनको जिस देहमें देखा था, उस देहको वे नित्यधाममें लेकर नहीं गये। हम बद्धजीवोंमें देह और देहीका जैसा भेद है, श्रील ठाकुरमें भी वैसा ही भेद है, तभी उन्होंने उस देहको रखकर देहीरूपमें निर्याणको अङ्गीकार किया।' आपलोगोंके द्वारा इस प्रकार 'पूर्वपक्ष' अथवा सन्देह करनेके यथेष्ट कारण हैं। किन्तु वैष्णवोंके विषयमें इस प्रकार सन्देह करनेपर हमारा भीषण अमङ्गल होगा। यद्यपि हम बहुतबार यह सुनते आ रहें हैं कि 'वैष्णवोंका शरीर अप्राकृत होता है', तथापि हमारे चित्तका सन्देहरूपी मल किसी प्रकारसे भी दूर नहीं हो रहा है; केवलमात्र वैष्णवोंके आदेश और शास्त्रीय वाणीकी मर्यादाके लिये ही मुखसे कुछ न कहनेपर भी हमारे चित्तमें प्राकृत भावना ही जाग्रत रहती है। मठाश्रित वैष्णवगण और उपस्थित सज्जनो! आपलोग मेरी इस बातसे असन्तुष्ट मत होना। चित्तमें इस प्रकारकी भावना मेरे समान दुर्दैवग्रस्त जीवके लिए असम्भव नहीं हैं। अनेक दिनोंतक अपने चित्तमें ऐसी भावनाओंके विद्यमान रहनेके कारण ही आज मैं श्रील भक्तिविनोद ठाकुरकी इस शुभ आविर्भाव–तिथिपर भी तिरोभाव–तत्त्वकी आलोचना कर रहा हूँ। वैष्णवोंमें देह–देहीका भेद नहीं होता, जिन्हें इस विषयमें सन्देह है, मैं एक उदाहरणके द्वारा उनके इस सन्देहको दूर करनेका प्रयास करूँगा। श्रील ठाकुर भक्तिविनोदने अपनी उसी

आविर्भाव-शक्तिके द्वारा जगतमें तिरोभाव-शक्तिके द्वारा प्रकट-

(साप्ताहिक गौड़ीय खण्ड-६, संख्या-४२ से अनुवादित)

तिरोभाव

प्रकटन एवं प्रकाशसे अन्तर्धान

[यदि प्रश्न हो कि देखा जाता है—श्रीगुरु और वैष्णव साधारण जीवकी भाँति किसी–न–किसी रोगसे ग्रस्त होकर ही देह त्याग करते हैं? क्या वे माया शक्तिके द्वारा मृत्यु प्राप्त कर शरीर त्यागते हैं या स्वशरीर अपने धाम जाते हैं? इसका कोई प्रमाण है?

इसके उत्तरमें श्रीचैतन्य महाप्रभुके अप्रकट होनेके प्रसंगमें श्रीकृष्णका भी प्रमाण देते हुए वैष्णव आचार्यवृन्द यही सिद्धान्त देते हैं कि श्रीभगवान् एवं उनके परिकरोंके द्वारा अपना शरीर छोड़कर या मरा हुआ दिखलाकर जाना एक जादूगरकी मृत्युके समान मिथ्या है और यही सत्य है कि वे आविर्भाव शक्तिके द्वारा इस जगत्में प्रकटित होते हैं और तिरोभाव शक्तिके द्वारा अपने नित्य स्वशरीरसे पुनः अप्रकटित हो जाते हैं।]

प्रश्न—श्रीश्रीमन्महाप्रभुके अप्रकटके विषयमें अनेक लोग अनेक प्रकारके मत प्रकाश करते हैं। श्रीचैतन्यचरितामृत और श्रीचैतन्यभागवतमें इस विषयमें कोई उल्लेख नहीं है। वे किस प्रकार अप्रकट हुए? आप वैष्णव धर्मके प्रचार और यथार्थताको निर्णय करनेमें समर्थ हैं। अतः आपसे इस प्रश्नका प्रमाण–सहित वास्तव उत्तर प्राप्त करनेकी आशा करते हैं।

उत्तर—श्रीचैतन्य–भागवत, श्रीचैतन्य–चरितामृत, श्रीचैतन्यचन्द्रोदय आदि ग्रन्थ ही श्रीमन्महाप्रभुके चरित्रके सम्बन्धमें प्रामाणिक और सुप्राचीन ग्रन्थ हैं। सभीके द्वारा मान्य इन ग्रन्थोंमें जिस विषयका उल्लेख नहीं है, उसके तात्पर्यको नहीं मानकर परवर्तीकालमें लिखित अप्रमाणिक (जाली) पुस्तकोंके प्रमाण या अनुमान और कल्पनाके बलसे उदित विभिन्न मतामत कभी भी 'प्रामाणिक' कहकर स्वीकार नहीं किये जा सकते। कुछ आधुनिक अप्रामाणिक–पुस्तकोंमें श्रीकृष्णकी असुर–विमोहन अन्तर्धान–लीलाके वर्णनका अनुकरणकर महाप्रभुके अन्तर्धानके कारणोंकी रचना

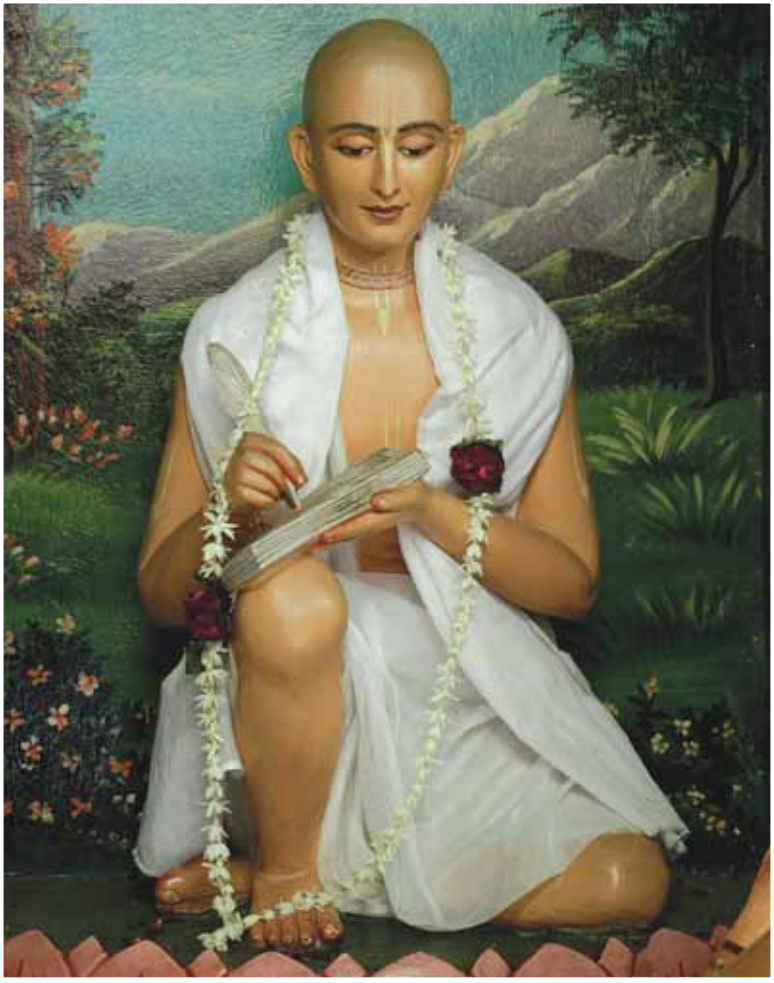

न विना विप्रलम्भेन संभोगः पुष्टिमश्नुते।
कषायिते हि वस्त्रादौ भूयान् रागो विवर्द्धते॥

(श्रील रूप गोस्वामी, उज्जवलनीलमणि १५/३)

[यदि कहो कि सम्भोग ही सुखमय रस होनेके योग्य है, विप्रलम्भ किस प्रकार रस होने योग्य हो सकता है? इसके समाधानमें प्राचीन पण्डितोंका कहना है कि] विप्रलम्भ सम्भोगका पुष्टिकारक अर्थात् उन्नति विधायक है, विप्रलम्भके बिना सम्भोगकी पुष्टि नहीं होती। जैसे रङ्गे हुए वस्त्रको पुनः रङ्ग करनेसे वस्त्रके रङ्गमें अत्यधिक रूपसे वृद्धि होती है, उसी प्रकार विप्रलम्भके द्वारा ही सम्भोगकी उत्कर्षता होती है।

श्रीमन्महाप्रभुके विरहमें श्रीलरूप गोस्वामी

स्थारूढ़स्यारादधिपदवि नीलाचलपते–
रदभ्रप्रेमोर्मिस्फुरितनटनोल्लासविवशः।
सहर्षं गायद्भिः परिवृततनुर्वैष्णवजनैः
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम्॥

(श्रीचैतन्याष्टकम् ७)

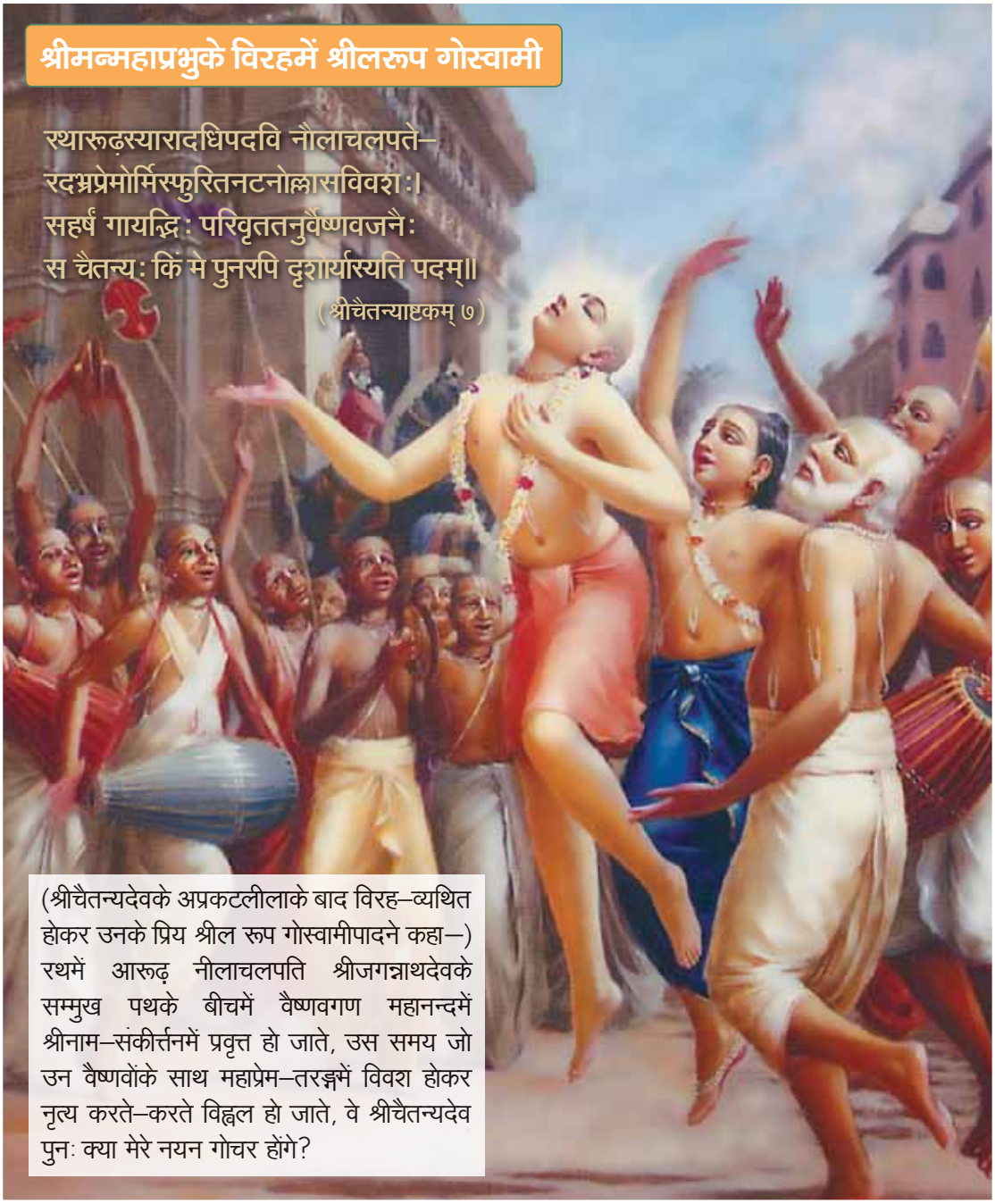

(श्रीचैतन्यदेवके अप्रकटलीलाके बाद विरह–व्यथित होकर उनके प्रिय श्रील रूप गोस्वामीपादने कहा–) रथमें आरूढ़ नीलाचलपति श्रीजगन्नाथदेवके सम्मुख पथके बीचमें वैष्णवगण महानन्दमें श्रीनाम–संकीर्त्तनमें प्रवृत्त हो जाते, उस समय जो उन वैष्णवोंके साथ महाप्रेम–तरङ्गमें विवश होकर नृत्य करते–करते विह्वल हो जाते, वे श्रीचैतन्यदेव पुनः क्या मेरे नयन गोचर होंगे?

श्रील प्रभुपाद

अखण्डकालकी भूमिकामें सम्भोग (मिलन) और विप्रलम्भ (विरह) एक साथ अवस्थित हैं। जिस विरहकी अनुभूतिकी बात अखण्डकालकी भूमिकामें देखी जाती है, वह सम्भोगकी उत्कर्षताकी ज्ञापक है।

(मासिक गौड़ीय वर्ष–७, संख्या–११)

श्रीकृष्णविरह या चिद्–विप्रलम्भ ही जीवोंका एकमात्र साधन है। जड़ीय–विरहसे उत्पन्न निर्वेद जड़ीय आसक्तिको ही प्रकाश करता है, किन्तु श्रीकृष्णविरहसे उत्पन्न निर्वेद 'कृष्णेन्द्रियप्रीति–वाञ्छा' का श्रेष्ठ निदर्शन है।

(मासिक गौड़ीय वर्ष–७, संख्या–११)

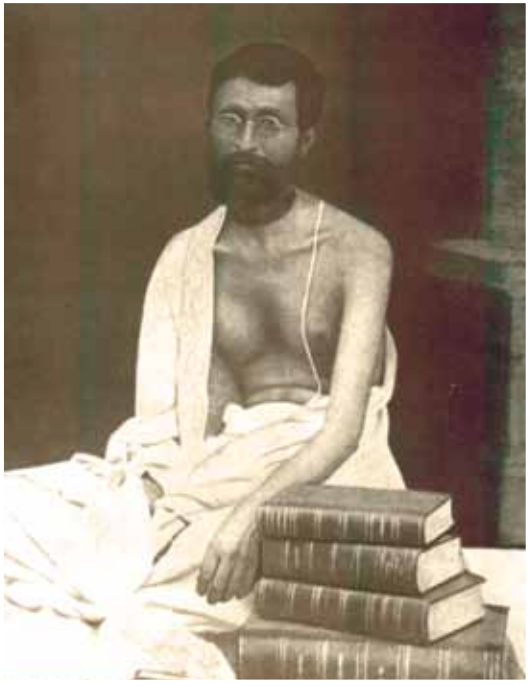

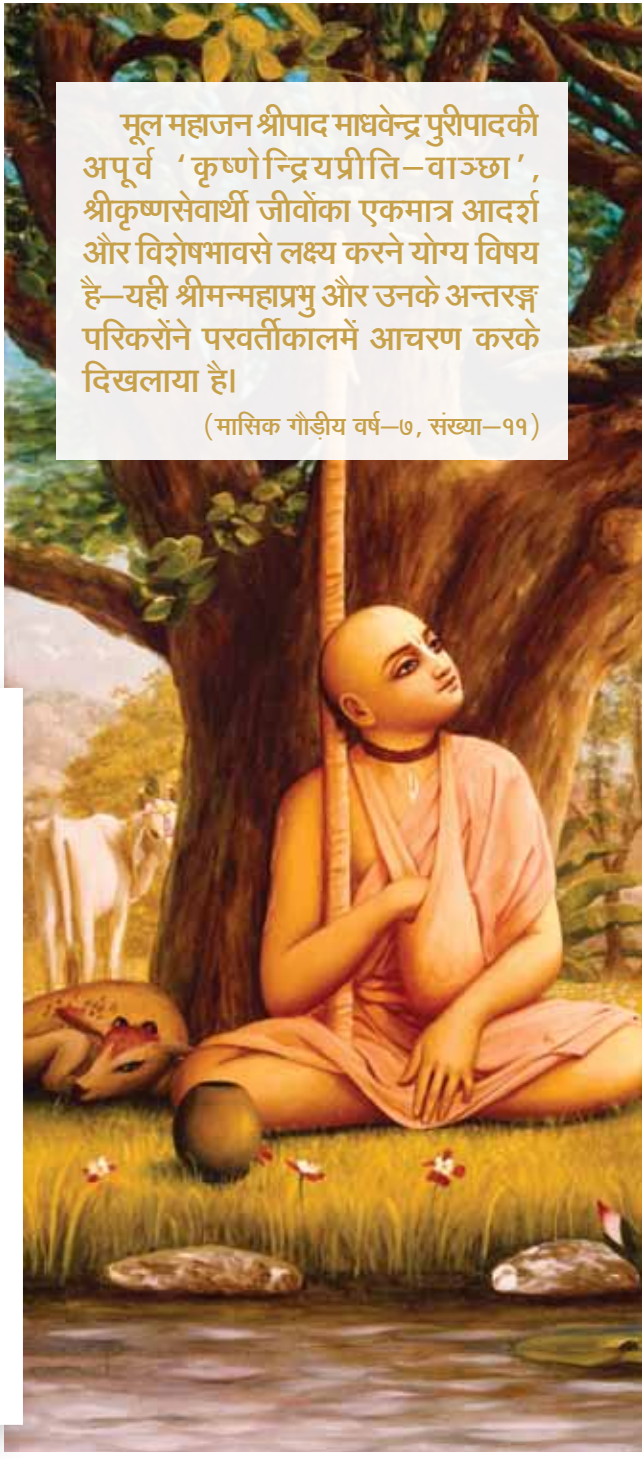

मूल महाजन श्रीपाद माधवेन्द्र पुरीपादकी अपूर्व 'कृष्णेन्द्रियप्रीति–वाञ्छा', श्रीकृष्णसेवार्थी जीवोंका एकमात्र आदर्श और विशेषभावसे लक्ष्य करने योग्य विषय है–यही श्रीमन्महाप्रभु और उनके अन्तरङ्ग परिकरोंने परवर्तीकालमें आचरण करके दिखलाया है।

(मासिक गौड़ीय वर्ष–७, संख्या–११)

श्रील प्रभुपाद एवं श्रीनरहरि सेवाविग्रह प्रभुके विरहमें श्रील भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज

आज प्रचुर हर्ष और आनन्दके बीच हृदयमें विषाद–वेदना ही जग रही है। हृदयकी वेदनाको हृदयमें अवरुद्ध (रोककर) रखनेकी चेष्टा करनेपर भी दीर्घ निःश्वास उसे व्यक्त कर रहा है। वही निःश्वास–वायु तरङ्गायित तथा विक्षोभित होकर शब्दके रूपमें परिणत हुई है। वह शब्द ही क्रन्दन है। उसकी भाषा अस्फुट, अर्द्धस्फुट, कण्ठरुद्ध एवं गद्गद है। तथापि छिपी हुई विरह–वेदना व्यक्त होनेसे ही कुछ प्रशमित होगी ऐसा समझकर श्रीश्रीगुरुपादपद्म एवं उनके एकनिष्ठ सेवक ठाकुर श्रीनरहरि सेवाविग्रह प्रभुके अदर्शनसे

श्रील भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजके विरहमें श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी महाराज

"श्रील केशव महाराजकी सर्वाधिक करुणा है, मुझे संन्यासी बनाना। मेरी यह प्रतिज्ञा थी कि मैं कदापि संन्यास ग्रहण नहीं करूँगा। परन्तु श्रील महाराजजीने मुझे जोरपूर्वक संन्यास प्रदान किया। आज वे मेरे प्रचारकी सफलताको देखकर निश्चय ही परमानन्दित हो रहे होंगे, क्योंकि पिछले वर्ष कोलकत्तामें जिस समय मैं अपने शिष्योंके साथ उनके दर्शनोंके लिए गया था, उस समय उनके शय्याशायी होनेपर भी वे मेरे प्रचारके विषयमें सुनकर अत्यन्त आनन्दित हुए थे। मेरा यह विश्वास है कि वे प्रकट या अप्रकट दोनों अवस्थाओंमें ही मेरे द्वारा अमेरिका, कनाडा, इङ्गलैंड, जर्मनी एवं प्रशान्त महासागरस्थित हनलूलू, जापान (टोकियो) आदि पाश्चात्य एवं पूर्वीय जगतमें श्रीमन्महाप्रभुकी वाणीके व्यापकरूपमें प्रचार होते देखकर अवश्य ही परमानन्दित हो रहे होंगे। मैं श्रील महाराजके निकट चिर कृतज्ञ हूँ।

वैराग्यविद्यानिजभक्तियोगं
अपाययत् मां अनभिप्सुमन्दम्।
श्रीकेशव भक्तिप्रज्ञान नामा
कृपाम्बुधिर्यस्तमहं प्रपद्ये॥

[अर्थात् मुझ अन्धे और पीनेके अनिच्छुक व्यक्तिको भी जिन्होंने वैराग्य–विद्या और अपने भक्तियोग (रूपीरस) को जोरपूर्वक पान कराया है, ऐसे कृपाके समुद्र–स्वरूप श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजजीके श्रीचरणकमलोंमें मैं शरणागत होता हूँ।]"

(श्रीभागवत पत्रिका वर्ष–१४, संख्या–७)

श्रील भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजके विरहमें श्रील भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराज

विरह–वेदना गौड़ीयका प्राण

श्रीगुरु–गौड़ीयने हमारे समान जीवोंकी दुर्दशाको लक्ष्यकर मर्त्य–जगतसे अन्तर्हित होकर अप्राकृत व्रजधाममें अपनी अभीष्ट सेवामें योगदान किया है। कृष्ण–प्रिया शुद्धा–सरस्वतीने अपने अन्तरङ्ग प्रेष्ठ–निजजनको आकर्षण–पूर्वक आत्मसात कर लिया है, यह देखकर विरह–विधुर सारस्वत गौड़ीयगणोंमें हाहाकार उत्थित हो गया है। 'मणिको खो बैठे सर्प' के समान गौड़ीय–गगनके उज्जवलतम तारारूपी महानिधिको खोकर सारस्वत गौड़ीयगण

आज हा–हुताश कर रहे हैं। चारों ओर ही उनके विरहकी अभिव्यक्ति उपलब्ध हो रही है। आकाश–वायुमें आज वही विरह–वार्त्ता प्रतिध्वनित होकर एक महा–झंझावातकी सृष्टि कर रही है। गौड़ीय–गगन आज स्तम्भित और निर्वाक हो गया है। श्रीपत्रिका अपने प्रतिष्ठाताके वियोगमें म्लान और किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर विरह–ज्वालामें दीर्घ निःश्वास परित्याग कर रही है।

आज इस दुर्दिनमें हमें कौन सान्त्वना देगा? कौन स्नेहपूर्ण कठोर–वाक्योंके द्वारा हमारे ऊपर शासन करेगा? कौन हमें वेद–वेदान्त–उपनिषद–गीता–

हे केशव! मैं एक क्षणके लिए भी आपके श्रीचरणकमलोंका परित्याग करनेमें समर्थ नहीं हूँ। हे नाथ! अतएव मुझे भी अपने साथ वैकुण्ठधाममें ले चलें।

और उनकी कृपाका अभाव प्रमाणित नहीं होता। जो इस प्रकारकी विरोधी–चिन्ता और भावधारामें अनुप्राणित हैं, वे ही न्यूनाधिक नास्तिक्य–विचारके अन्तर्भुक्त हैं। गुरुतत्त्वके प्रति अविश्वास और अश्रद्धा ही इसका मूल कारण है। जो श्रीगुरुदेवको कर्मफलबाध्य जीवविशेष और भोगका जनक (भोगकी प्रेरणा देनेवाला) मानते हैं, वे वञ्छित और गुरुतत्त्वसे सौ–योजन दूर अवस्थित हैं।

(श्रीगौड़ीय पत्रिका वर्ष–२२, संख्या–१)

श्रीगुरुचरणोंमें निवेदन

वर्त्तमान विश्वकी दुरवस्थापर विचारकर श्रीजगन्नाथ–श्रीभक्तिविनोद– श्रीगौरकिशोर–श्रीसरस्वती–श्रीकेशवादि गौड़ीय–गुरुवर्गने एक–एककर मेरे समान भजनविमुख व्यक्तिका परित्याग करके अपने–अपने धाममें शुभविजय की है। हे आश्रयकेशव! आपका उच्छिष्ट भोजी होकर भक्तोंके साथ भगवान्‌की अतिमर्त्त्य चरितावलीके श्रवण–कीर्त्तनके द्वारा विषय–वासनाओंका परित्यागकर इस दुस्तर संसार–सागरको पार कर सकूँ–यही मेरी एकमात्र आकांक्षा है। हे केशव! मैं आधे क्षणके लिये भी आपके श्रीचरणकमलोंका परित्याग करनेका इच्छुक नहीं हूँ; मुझे भी अपने धाममें कृपापूर्वक स्थान प्रदान किजिये।

नाहं तवाङ्घ्रिकमलं क्षणार्धमपि केशव।
त्यक्तुं समुत्सहे नाथ स्वधाम नय मामपि॥

(श्रीमद्भा॰ ११/६/४३)

[अर्थात् हे केशव! मैं एक क्षणके लिए भी आपके श्रीचरणकमलोंका परित्याग करनेमें समर्थ नहीं हूँ। हे नाथ! अतएव मुझे भी अपने साथ वैकुण्ठधाममें ले चलें।]

(श्रीगौड़ीय पत्रिका वर्ष–२२, संख्या–१)

श्रील गुरुपादपद्मकी करुणाकी प्रार्थना

हमारे द्वारा 'गुरुसेवक' के रूपमें चिह्नित होनेकी इच्छा करनेपर हम गुरुसेवासे दूर चले जाते हैं; किन्तु यदि हम 'गुरुदासानुदास' बन सकें, तो किसीकालमें श्रीगुरुदेवकी हार्दिक सेवाका अधिकार प्राप्त करनेकी सम्भावना है। हमारे श्रीगुरुपादपद्म जिस प्रकारके गुरुसेवकनिष्ठ–गुरुगतप्राण थे, हम भी उनके निकट गुरुसेवाके लोभसे ऐसी ऐकान्तिक निष्ठा और सेवादर्शकी प्रार्थनाकर अपना श्रद्धार्घ्य निवेदन कर रहे हैं। श्रीगौड़ीय–गुरुवर्ग हमारे प्रति प्रचुर आशीर्वाद करें, जिससे हम श्रीश्रीगौराङ्ग–गान्धर्विका–गिरिधारी और श्रीश्रीगौर–राधा–विनोदबिहारीजीकी अप्राकृत सेवामें अधिकार प्राप्त कर सकें। सर्वविघ्न विनाशक श्रीश्रीनृसिंहदेव हमारे भजनपथकी बाधा–विपत्तियोंको अनुग्रहपूर्वक दूर करें, यही उनके श्रीचरणकमलोंमें एकान्तिक प्रार्थना है।

(श्रीगौड़ीय पत्रिका वर्ष–३६, संख्या–१)

'विरह' शब्दकी व्याख्या विशेषरूपसे दो क्षेत्रोंमें की गयी है–प्रथमतः गुरु–वैष्णवोंके अभावमें और द्वितीयतः भगवानके अभावमें भक्त विरहसे अक्रान्त होते हैं।

(श्रीगौड़ीय पत्रिका वर्ष–४३, संख्या–११)

श्रील गुरुदेवके प्रति उनके समकालीन गौड़ीय-वैष्णवोंकी पुष्पाञ्जली

श्रीश्रीमद्भक्तिवल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराजकी मधुर स्मृतियाँ

[ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके श्रीजगन्नाथ पुरी धाममें अप्रकट लीला प्रकाशित करनेके दस दिन पूर्व लिखित]

विरहमें मनोहर स्मृतियोंका स्मरण

श्रीश्रीमद्भक्तिविज्ञान भारती गोस्वामी महाराज

पूर्व परिचय

पूज्यपाद श्रील भक्तिवेदान्त नारायण महाराजका आविर्भाव बिहारके बक्सर जिलेके अन्तर्गत तिवारीपुर नामक ग्राममें हुआ था। उनका पितृदत्त नाम था नारायण तिवारी। दीक्षाके उपरान्त इनका नाम हुआ गौर नारायण दास। गौड़ीय–परम्पराके विचारोंमें इनकी अत्यधिक रुचिको देखकर श्रील भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज कहते थे कि मैंने उत्तर–पश्चिम भारतको विजय कर लिया है। थोड़े ही समयके मठवासके उपरान्त इनके गुरुदेवने इन्हें संन्यास प्रदान किया तथा इनका नाम हुआ श्रीभक्तिवेदान्त नारायण महाराज।

मथुरा मठमें वास

अपने गुरुदेवकी आज्ञासे श्रील महाराजजीने मथुरा स्थित श्रीकेशवजी गौड़ीय मठका सम्पूर्ण दायित्व लिया। उस समय मठमें धन तथा जनका बहुत अभाव होनेपर भी महाराजजी बहुत अच्छी तरह मठकी परिचालना करते थे।

श्रीश्रीमद्भक्तिप्रसाद पुरी महाराजजीकी स्नेहपूर्ण स्मृतियाँ

[श्रीश्रीमद्भक्तिप्रसाद पुरी महाराजजी श्रीचैतन्य गौड़ीय मठके संस्थापक नित्य–लीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिदयित माधव गोस्वामी महाराजके मुख्य शिष्योंमेंसे एक हैं। उनके गुरु महाराजने उन्हें श्रीचैतन्य गौड़ीय मठकी वृन्दावन–शाखाके परिचालनका दायित्व और गौड़ीय–सम्प्रदायके ग्रन्थोंका हिन्दीमें प्रकाशनका दायित्व दिया था। उन्होंने अपना अधिकांश समय वृन्दावनमें सेवा करते हुए व्यतीत किया और अपनी वृद्ध अवस्थामें श्रील प्रभुपादके आविर्भाव स्थान, श्रीजगन्नाथ पुरी स्थित श्रीचैतन्य गौड़ीय मठमें निवास कर रहे हैं।]

श्रीपाद नारायण महाराजजीकी भाषा अप्राकृत थी और शब्दोंका चयन अपूर्व था। उन्होंने ग्रन्थोंके माध्यमसे महाप्रभुके सम्प्रदायकी अत्यधिक सेवा की है। मैं उनका उच्छिष्ट भोजी दास हूँ।

उनके गुरु महाराजने उन्हें मथुरामें श्रीकेशवजी गौड़ीय मठकी देखरेखका दायित्व दिया था और मेरे गुरु महाराजने मुझे हमारे वृन्दावन मठकी देखरेखका दायित्व दिया था। इस प्रकार हम दोनों ही व्रजमें रहते थे और प्रायः एक दूसरेसे भेंट करते थे। उनकी प्रत्येक क्रिया अप्राकृत थी। भेंट होने पर अप्राकृत स्नेह प्रदान करते थे। मेरी ग्रन्थ–सेवामें भी वे सहायता करते थे और कहते थे—"अपने हिन्दी ग्रन्थोंके लिए आप हमारे ग्रन्थोंसे निसंकोच कुछ भी ले सकते हैं"। वे अति उत्साहपूर्वक ग्रन्थ–प्रकाशनसे सम्बन्धित मेरे समस्त प्रश्नोंका उत्तर देते थे।

वे मुझे पुनः मेरे गुरु महाराजकी सेवामें लाए थे। वे अप्राकृत जगत्के हैं। मैंने उनके मुखारविन्दसे शास्त्रोंके गूढ़ अर्थोंका श्रवण किया है, वे अत्यन्त गूढ़ विचार कहते थे। मैंने श्रीपाद नारायण महाराज और श्रील भक्तिप्रज्ञान केशव महाराजको एक दूसरेके लिए क्रन्दन करते देखा है। एक गुरुका अपने शिष्यके प्रति किस प्रकारका अप्राकृत स्नेह होता है, वह मैंने श्रील भक्तिप्रज्ञान केशव महाराजमें देखा है। ऐसा स्नेह बहुत विरल है। श्रीपाद नारायण महाराज और उनके गुरु महाराजका सम्बन्ध प्रत्येक व्यक्तिकी समझमें नहीं आयेगा। जब वे मथुरा छोड़कर गोवर्धन रहने गए, तो वे अपने गुरुदेवके लिए क्रन्दन किया करते थे। उन्होंने जो लीलाकी है, उसे समझना अत्यन्त कठिन है।

विरह–संवाद

श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिके संस्थापक–आचार्य नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजजीके चरणाश्रित डॉ॰ सत्यपाल गोयल विगत २८ नवम्बर २०१० को प्रातः ६–४५ बजे ग्वालियर स्थित अपने गृहमें ६९ वर्षकी आयुमें हरिस्मरण करते हुए स्वधामको प्राप्त हुए हैं।

उन्होंने सद्–गार्हस्थ्य जीवन व्यतीत करते हुए दिन–रात सद्–ग्रन्थोंके अध्ययनमें रहकर अनेक पारमार्थिक प्रबन्ध लिखे हैं। श्रीभागवत–पत्रिकाके सहकारी सम्पादक संघमें इनकी सेवाएँ सदैव स्मरणीय रहेगी। 'कलियुगमें श्रीनाम–जप साधना' शीर्षकसे वर्षोंतक इनके प्रबन्ध श्रीश्रीभागवत–पत्रिकामें प्रकाशित होते रहे हैं।

इनकी स्वधाम प्राप्तिसे भक्तगण विरह सन्तप्त हैं।

विशेष ज्ञातव्य

श्रीश्रीभागवत–पत्रिकाके पाठकों और सदस्योंको सूचित किया जाता है कि श्रीपत्रिका इस सम्पूर्ण आठवें वर्ष श्रील गुरुदेव नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीभक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीके विरह–विशेषांकके रूपमें प्रकाशित होगी। अतः इस वर्ष पत्रिकाकी दो–दो संख्याएँ एक साथ दो–दो महीनोंमें एक बार प्रकाशित होगी।

प्रकाशनके सम्बन्धमें विवरण

(प्रपत्र–४, नियम–८)

१. प्रकाशनका स्थान–श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरा (उ. प्र.)
२. प्रकाशनकी अवधि–मासिक
३. प्रकाशकका नाम–त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त माधव महाराज
पता–श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरा (उ. प्र.)
नागरिकता–भारतीय
४. सम्पादकका नाम–श्रीमाधवप्रिय दास ब्रह्मचारी,
श्रीअमलकृष्ण दास ब्रह्मचारी
पता–श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरा (उ. प्र.)
नागरिकता–भारतीय
५. मुद्रक–त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त माधव महाराज
६. उन व्यक्तियोंके नाम और पते जो इस पत्रके स्वामी हैं तथा जो समस्त पूंजीके एक प्रतिशतसे अधिकके भागीदार हैं–श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति ट्रस्ट

मैं त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्ति वेदान्त माधव महाराज एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वासके अनुसार उपर्युक्त विवरण सत्य हैं।

मार्च, २०११
ह. त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त माधव महाराज

श्रील गुरुदेवके प्रति अपनी कृतज्ञताका स्मरण करते हुए श्रील गुरुदेवके चरणाश्रित (१) श्रीमती पुष्पा देवी कम्बोज (दिल्ली), (२) श्रीलाल प्रभु एवं उनकी पत्नी श्रीमती राधाकान्ति दासी (पर्थ, आस्ट्रेलिया) एवं (३) श्रीसुबल सखा दासाधिकारी (बङ्गलूरु) ने इस विरह–विशेषाङ्कके प्रकाशन हेतु आर्थिक योगदानके द्वारा विशेष सेवा–सौभाग्यको वरण किया है। इन सभीकी विशेष सेवाके लिये श्रील गुरुदेव अपने नित्यधामसे इन पर विशेष कृपा वर्षित करें–यही श्रील गुरुदेवके अभय चरणकमलोंमें विनम्र प्रार्थना है।

'श्रीश्रीभागवत पत्रिका' का सम्पादक एवं कार्यकारी मण्डल

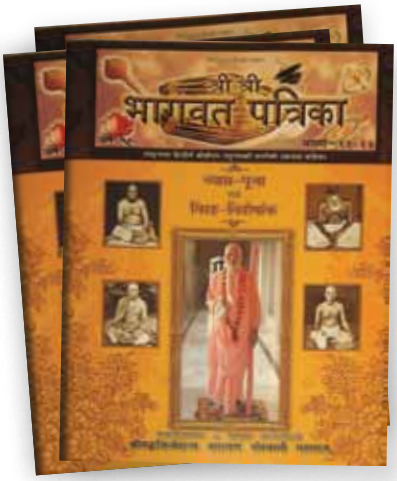

श्रीश्रीभागवत–पत्रिकाके ग्राहकोंसे वार्षिक सदस्यता–शुल्क भुगतानके लिए निवेदन

आदरणीय श्रीश्रीभागवत–पत्रिकाके ग्राहको!

आपसे यह निवेदन किया जा रहा है कि आपमेंसे जिन्होंने अभी तक इस वर्षका देय वार्षिक शुल्क भुगतान नहीं किया है, वह शीघ्र–अतिशीघ्र इस वार्षिक शुल्कका भुगतानकर पत्रिकाके माध्यमसे श्रीवैकुण्ठ–वार्त्तावह निरन्तर प्राप्त करनेके सौभाग्यको प्राप्त करें।

श्रीश्रीभागवत–पत्रिकाके इस अष्टम वर्षमें समस्त अंक रंगीन और सचित्र विरह–विशेषांकके रूपमें प्रकाशित होंगे, अतः केवल इस अष्टम वर्षके लिए ही वार्षिक शुल्क भारतीय सदस्योंके लिए ३०० रुपये तथा विदेशी सदस्योंके लिए ३० अमेरिकन डालर किया गया है। हम अपने सभी सहृदय पाठक–भक्तोंसे इस विषयमें सहयोगकी आशा करते हैं।

इस वर्षसे सदस्यवृन्द निम्न प्रकारसे सहजरूपमें शुल्क भुगतान कर सकते हैं:

भारतीय सदस्योंके लिए

नये सदस्योंके लिए

कृपया www.bhagavatpatrika.com वैबसाइटपर जायें और वहाँ दिये गये Instructions के अनुसार सदस्य बनें।

सदस्यता नवीकरणके लिए

(१) Bank to bank NEFT transfer

Account name: SRI BHAGVAT PATRIKA SRI GOUDIYA
Account no. : 037201000010611
IFSC code: IOBA0000372
Bank: Indian Overseas bank

८७९१२७३३०६ phone number पर अपनी ग्राहक संख्या या अपना नाम और सदस्य शुल्कके साथ एक SMS भेजें।

अथवा

mathuramath@gmail.com में अपनी ग्राहक संख्या या अपना नाम और सदस्य शुल्कके साथ एक email भेजें।

(२) Demand draft or Cheque (account payee)

payable to:
"SRI BHAGVAT PATRIKA SRI GOUDIYA"
श्रीश्रीभागवत–पत्रिका कार्यालय,
श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, जवाहर हाट, मथुरा, उ.प्र.
२८१००१ के पतापर
Demand draft or Cheque भेजें।

(३) Money order

श्रीश्रीभागवत–पत्रिका कार्यालय,
श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, जवाहर हाट, मथुरा, उ.प्र.
२८१००१ के नामपर भेजें।

विदेशी सदस्योंके लिए

नये सदस्य तथा सदस्यता नवीकरणके लिए

कृपया www.bhagavatpatrika.com वैबसाइटपर जायें और वहाँ दिये गये instructions के अनुसार नये सदस्य बनें या अपनी सदस्यताका नवीकरण करें।

विदेशी सदस्योंके लिए इस वर्षसे "Paypal" द्वारा भुगतान करनेकी सुविधा उपलब्ध करायी गयी है। अधिक जानकारीके लिए www.bhagavatpatrika.com वैबसाइट देखें।

नमः ॐ विष्णुपादाय केशवप्रेष्ठाय भूतले।
श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त-नारायणेति-नामिने॥ १॥

इस भूतलपर अवतीर्ण श्रीकेशवके प्रेष्ठजन, पक्षान्तरमें ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजजीके निजजन ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजको मैं नमन करता हूँ।

श्रीकृष्णलीलाकथने सुदक्षं औदार्य-माधुर्य-गुणैश्च युक्तम्।
वरं वरेण्यं पुरुषं महान्तम् नारायणं त्वं शिरसा नमामि॥ २॥

श्रीकृष्णकी लीला-कथाओंका कीर्त्तन करनेमें परम दक्ष, औदार्य (महावदान्यता) तथा माधुर्य (मधुर-स्वभाव) आदि गुणोंसे युक्त, अभीष्टवर प्रदान करनेवालोंमें श्रेष्ठ तथा महान् पुरुष ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके श्रीचरणकमलोंमें मैं नतमस्तक होता हूँ।

वन्देऽहं श्रीगुरुवरं श्रीरूपानुगप्रवरम्।
व्रजरसरसिकं च कृपामूर्तिं नारायणम्॥ ३॥

मैं उन श्रेष्ठ श्रीगुरु श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजकी वन्दना करता हूँ जो श्रीलरूप गोस्वामीके अनुगतजनोंमें अतिश्रेष्ठ, व्रजरसके परम रसिक और कृपाके मूर्तिमान विग्रह हैं।

युगाचार्यं प्रभुं वन्दे नारायणं करुणामयम्।
राधादास्यं लोभं दत्वा तारयते भुवनत्रयम्॥ ४॥

मैं उन करुणामय प्रभु श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजकी वन्दना करता हूँ जिन्होंने 'राधादास्य' प्राप्त करनेका लोभ प्रदानकर इस त्रिभुवनको तार दिया है, तथा इसीलिए जो श्रीबरसाना धामके श्रीव्रजाचार्य पीठ द्वारा 'युगाचार्य' की उपाधिसे विभूषित हुए हैं।

श्रील गुरुदेवका समाधि पीठ